संपादकीय

किशोरों के हित में ऐतिहासिक फैसला

अमेरिका में लॉस एंजेलिस की एक जूरी द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के घातक प्रभावों से त्रस्त एक युवती के पक्ष में सुनाए गए ऐतिहासिक फैसले से दुनिया भर के अभिवावकों को राहत मिली है। दरअसल, सोशल मीडिया की लत लगाने से जुड़े एक मामले में मेटा और यूट्यूब पर 56 करोड़ का जुर्माना लगाया गया है। उल्लेखनीय है कि एक युवती ने मेटा और यूट्यूब पर आरोप लगाया था कि इनकी वजह से उसे सोशल मीडिया की घातक लत लगी। हालांकि, अब तक ये कंपनियां दलील देती रही हैं कि वे मात्र सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं और इसकी सामग्री के लिये जिम्मेदार नहीं हैं। लेकिन कोर्ट में वकीलों ने पीड़िता के पक्ष में दलील दी कि जानबूझकर इस तरह के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म बनाए गए हैं ताकि उपयोगकर्ता कथित सोशल मीडिया की लत के शिकार बन जाएं। शुरुआत से पहचान गुप्त रखने वाली बीस वर्षीय युवती केली के वकीलों की दलील को जूरी ने स्वीकार किया कि इस लत से उसकी मानसिक सेहत को नुकसान हुआ है। जूरी ने सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों की दलीलों को दरकिनार करते हुए मेटा और यूट्यूब पर साठ लाख अमेरिकी डॉलर यानी छप्पन करोड़ रुपये चुकाने का आदेश दिया है। जूरी ने माना कि गूगल तथा मेटा ने इन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के संचालन में अपने मुनाफे के मद्देनजर अनुचित उपायों का सहारा लिया है। जूरी ने इसे अनैतिक भी बताया। जूरी के निर्णय के अनुसार इस मामले में जुर्माने की सत्तर फीसदी राशि मेटा तथा तीस फीसदी रकम गूगल को चुकानी होगी। उल्लेखनीय है कि पूरी दुनिया में इन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के विरुद्ध हजारों मुकदमें चल रहे हैं। जिसमें कई वे लोग भी शामिल हैं जिनके बच्चों ने सोशल मीडिया की लत का शिकार होकर आत्मघाती कदम उठाये हैं। ब्रिटेन समेत कई देशों में अभिभावक इस लत से बच्चों को बचाने के लिये आंदोलन करते रहे हैं। यही नहीं, अमेरिका में ही विभिन्न अदालतों में सोशल मीडिया के घातक प्रभावों से बच्चों को बचाने के लिये सैकड़ों मामले चल रहे हैं। विश्वास किया जा रहा है कि इस मुकदमे के फैसले का प्रभाव उन तमाम मामलों में भी पड़ सकता है, जो दुनिया के विभिन्न देशों में चल रहे हैं। हालांकि, दोषी पाये गए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के कर्ताधर्ता इस फैसले से असहमति जताते हुए इसके खिलाफ अपील करने की बात कर रहे हैं। उनकी दलील है कि किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले घातक प्रभाव के अनेक अन्य कारण हो सकते हैं।

विनोद शर्मा, संपादक

भारत चीन के आर्थिक संबंध दोस्ती है या दबाव ?

भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा 116 अरब डॉलर के पार जा चुका है। इसका मतलब यह है कि भारत चीन से बहुत ज्यादा खरीद रहा है और बहुत कम बेच पा रहा है। चीन से आयात 135 अरब डॉलर के करीब है, जबकि भारत का निर्यात मुश्किल से 20 अरब डॉलर के आसपास सिमटा हुआ है। यह असंतुलन सिर्फ आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि यह भारत की आर्थिक निर्भरता का खुला सबूत है। हम आपको बता दें कि भारत आज भी इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, दवाओं के कच्चे माल और सोलर उपकरणों के लिए चीन पर काफी हद तक निर्भर है। दरअसल सस्ती कीमतों का लालच भारत को इस जाल में बांधे हुए है। लेकिन असली सवाल यह है कि क्या यह सस्ता सौदा वास्तव में सस्ता है? जब एक देश आपकी सप्लाई चेन पर नियंत्रण रखता है, तो वह केवल व्यापार नहीं करता, बल्कि आपकी अर्थव्यवस्था पर भी असर डालता है। यही चीन कर रहा है। हैरत की बात यह भी है कि गलवान जैसी घटनाओं के बाद उम्मीद थी कि भारत चीन से दूरी बना लेगा।

नीरज कुमार दुबे ।

भारत और चीन के बीच व्यापार का रिश्ता आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां सच्चाई और दिखावा आमने सामने खड़े हैं। ऊपर से सब कुछ तेजी से बढ़ता हुआ दिखता है, लेकिन अंदर ही अंदर यह रिश्ता भारत की आर्थिक रीढ़ पर दबाव डाल रहा है। यह कहानी केवल व्यापार की नहीं, बल्कि ताकत, निर्भरता और रणनीति की है। हम आपको बता दें कि भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार 155 अरब डॉलर से भी ऊपर पहुंच चुका है। पहली नजर में यह उपलब्धि लगती है, लेकिन यही आंकड़ा सबसे बड़ा खतरे का संकेत भी है। कारण साफ है, यह व्यापार संतुलित नहीं है। भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा 116 अरब डॉलर के पार जा चुका है। इसका मतलब यह है कि भारत चीन से बहुत ज्यादा खरीद रहा है और बहुत कम बेच पा रहा है। चीन से आयात 135 अरब डॉलर के करीब है, जबकि भारत का निर्यात मुश्किल से 20 अरब डॉलर के आसपास सिमटा हुआ है। यह असंतुलन सिर्फ आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि यह भारत की आर्थिक निर्भरता का खुला सबूत है। हम आपको बता दें कि भारत आज भी इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, दवाओं के कच्चे माल और सोलर उपकरणों के लिए चीन पर काफी हद तक निर्भर है। दरअसल सस्ती कीमतों का लालच भारत को इस जाल में बांधे हुए है। लेकिन असली सवाल यह है कि क्या यह सस्ता सौदा वास्तव में सस्ता है? जब एक देश आपकी सप्लाई चेन पर नियंत्रण रखता है, तो वह केवल व्यापार

नहीं करता, बल्कि आपकी अर्थव्यवस्था पर भी असर डालता है। यही चीन कर रहा है। हैरत की बात यह भी है कि गलवान जैसी घटनाओं के बाद उम्मीद थी कि भारत चीन से दूरी बना लेगा। लेकिन हकीकत उलट है। दोनों देशों के बीच व्यापार न केवल जारी है, बल्कि तेजी से बढ़ा है। कारण यही है कि भारत अभी भी कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में चीन पर निर्भर है। बुलेट ट्रेन परियोजना से लेकर औद्योगिक मशीनों तक, भारत को चीन से सामान लेना पड़ रहा है। यानी राजनीतिक तनाव अपनी जगह है, लेकिन आर्थिक मजबूरी अपनी जगह है। मगर भारत अब इस असंतुलन को समझ चुका है और धीरे धीरे अपनी रणनीति बदल रहा है। देश में विनिर्माण को बढ़ावा दिया जा रहा है। छोटे और मध्यम उद्योगों को ताकत दी जा रही है। नए व्यापार समझौते किए जा रहे हैं ताकि निर्यात बढ़ सके। इसके साथ ही, ऊर्जा के क्षेत्र में भी भारत ने समझदारी दिखाई है। अब वह केवल एक स्रोत पर निर्भर नहीं रहना चाहता। तेल और गैस की सप्लाई को विविध बनाया जा रहा है। यह संकेत साफ है कि भारत अब केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि उत्पादक बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। दूसरी तरफ चीन अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए पूरी ताकत लगा रहा है। उसका लक्ष्य साफ है कि उसे दुनिया की फैक्ट्री बने रहना है और हर बाजार में अपनी पकड़ मजबूत करनी है। हम आपको यह भी बता दें कि चीन का वैश्विक व्यापार अधिशेष लगातार बढ़ रहा है। वह नए बाजारों में घुस रहा है और तकनीकी तथा खनिज संसाधनों पर नियंत्रण बढ़ा रहा है। यही वजह है कि भारत जैसे देश चाहकर भी उससे पूरी तरह दूरी नहीं बना पा रहे हैं। इसके अलावा, हाल के बयानों में चीन ने भारत के साथ सहयोग की बात कही है। लेकिन यह सहयोग उतना सीधा नहीं जितना दिखता है।

इसके पीछे एक रणनीतिक खेल है। चीन चाहता है कि भारत उसके साथ खड़ा रहे, जबकि भारत अपनी स्वतंत्र आर्थिक पहचान बनाना चाहता है। यानी यह रिश्ता अब दोस्ती का नहीं, बल्कि संतुलन का खेल बन चुका है। यह एक ऐसा दौर है जहां दोनों देश एक दूसरे से जुड़े भी हैं और एक दूसरे से बचने की कोशिश भी कर रहे हैं। इसमें भी कोई दो राय नहीं कि आने वाले समय में भारत और चीन के बीच आर्थिक मुकाबला और तेज होने वाला है क्योंकि सप्लाई चेन का बंटवारा होगा, नए विनिर्माण केंद्र उभरेंगे और तकनीक के क्षेत्र में सीधी टक्कर होगी। भारत अगर अपनी रणनीति पर कायम रहता है, तो वह इस असंतुलन को धीरे धीरे कम कर सकता है। लेकिन अगर वह चूक गया, तो यह निर्भरता और गहरी हो जाएगी। बहरहाल, भारत और चीन का व्यापार संबंध एक दोधारी तलवार है। एक तरफ यह आर्थिक अवसर देता है, दूसरी तरफ यह निर्भरता का खतरा भी पैदा करता है। अब फैसला भारत के हाथ में है कि वह इस रिश्ते को अपने पक्ष में मोड़ता है या फिर आंकड़ों की चमक में छिपे खतरे को नजरअंदाज करता रहता है। क्योंकि सच्चाई यही है, यह व्यापार नहीं, बल्कि आर्थिक शक्ति की लड़ाई है।

सभ्य आदमखोर- बंदर से लॉकर तक का सफर

डार्विन साहब कह गए थे कि इंसान बंदर से बना है, पर वे संभवतः यह लिखना भूल गए कि इंसान बनने के बाद यह बंदर और भी खतरनाक हो जाएगा। जब बंदर आदमी बना और लॉकर की चाबी ढूँढ लाया, वहीं से हमारे पतन की शुरुआत हुई। जब तक हम जंगलों में थे, हम प्रकृति के साथ न्याय करते थे और सिर्फ उतना ही तोड़ते थे जितना पेट मांगता था। लेकिन जैसे ही हमने सभ्यता का चोगा पहना, हमें तिजोरीभरने की लाइलाज बीमारी लग गई। कल की भूख मिटाने के अंधाधुंध चक्कर में हमने आज की इंसानियत को कोल्ड स्टोरेज में डाल दिया है। यहीं से उस सभ्य आदमखोर का जन्म हुआ, जो आज महंगे सूट-बूट पहनकर बड़ी ही नजाकत से दूसरों का हक चबाता है। यह जमाखोरी का नशा ऐसा है कि आदमी का पेट तो भर गया, पर नीयत कभी नहीं भरी। शुरुआत तो अकाल से बचने के लिए दो मुट्ठी अनाज बचाने से हुई थी, पर इंसान की फितरत देखिए–जैसे ही अपनी कोठरी भरी, उसे यह चिंता सताने लगी कि पड़ोसी की कोठरी खाली क्यों है यह लत इतनी बढ़ी कि आदमी अब अक्ल की भी जमाखोरी करने लगा है। जिसके पास जितनी ज्यादा डिग्रियां हैं, वह उतना ही बड़ा गुरु घंटाल बन बैठा है। ज्ञान अब भीतर की रोशनी नहीं रहा, बल्कि दूसरों को नीचा दिखाने वाली एक टॉर्च बन गया है। अहंकार का यह स्टॉक अब जरूरत के लिए नहीं, बल्कि जलन के लिए बटोरा जाता है। आज का भंडारण केवल एक ट्रॉफी है, जो चिल्ला-चिल्लाकर कहती है कि मेरे पास वह फालतू माल है, जो तुम्हारे पास सपने में भी नहीं है। आजकल के सभ्य आदमी में दुनिया को नियंत्रित करने की ऐसी खुजली है कि वह सोचता है कि हर जगह बस उसी का सिक्का चलना चाहिए। जमाखोरी ने अब एकाधिकार (रूष्ठठ्ठशश्चशद्य4) का भयानक रूप ले लिया है, जहाँ मकसद खुद को सुरक्षित करना नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को लाचार करना है। मुख्य राशन और संसाधनों को दबाकर बैठ जाना आज का सबसे बड़ा पावर गेम है, ताकि पूरी दुनिया पैरों में गिरकर रोटी की भीख माँगे। यह खेल अब उस स्तर पर पहुँच गया है जहाँ ताकतवर देश कह रहे हैं– ÷हवा मेरी, पानी मेरा, और तुम्हारी सांसों पर भी टैक्स मेरा! आज की दुनिया पहियों पर नहीं, बल्कि तेल की गंध पर दौड़ रही है। जहाँ भी जमीन के नीचे काला सोना दिखता है, वहाँ लोकतंत्र बचाने के पाखंडी नाम पर मिसाइलें उतरने लगती हैं। यह कोई वैचारिक युद्ध नहीं, बल्कि पाइपलाइन पर कब्जा करने की वही पुरानी कबीलाई लड़ाई है, जिसमें बस तलवारों की जगह स्मार्ट बम आ गए हैं। ग्लोबल बिसात पर बैठे इन चौधरियों की चौधराहट में आम आदमी बुरी तरह बेहाल है। अमेरिका, इजरायल और ईरान जैसे देश उस ग्लोबल पंचायत के चौधरी हैं जो आपस में भिड़ते तो दूर रेगिस्तानों में हैं, पर धुआँ हमारे घर के चूल्हे से निकलता है। वहाँ कोई मिसाइल छोड़ता है और यहाँ हमारी रसोई गैस का सिलेंडर रॉकेट बन जाता है। हमारी रोटियाँ अब हमारे तवे पर नहीं, बल्कि व्हाइट हाउस और तेहरान के चौधरियों के मूड पर सिकती हैं। सबसे दुखद तो यह है कि तबाही अब एक धंधा बन चुकी है, जहाँ लाशें सिर्फ टर्नओवर के आंकड़े हैं। युद्ध अब लाइव टेस्टिंग के मैदान बन गए हैं, जहाँ बम गिरते ही हथियार कंपनियों के मैनेजर शैंपेन खोलते हैं। पहले विनाश से कमाओ, फिर उसी मलबे पर नई बिल्डिंग बनाने का पुनर्निर्माण टेंडर लो–यानी पत्थर भी हमारा, और चोट लगने के बाद की पट्टी भी हमारी! यह जबर मारे और रोने भी न दे वाली कहावत को चरितार्थ करता है। कब्जे की यह भूख अब जमीन से बढ़कर डिजिटल उपनिवेशवाद तक जा पहुँची है। अब जमीन कब्जाने की

मेहनत कौन करे, जब डेटा कब्जाना ज्यादा आसान है आपकी जेब में रखा फोन वह मुखबिर है जो आपकी हर हरकत, पसंद और सोच को स्टोर कर रहा है ताकि भविष्य में आपको वही बेचा जा सके जो वे चाहते हैं। यह मानसिक गुलामी परमाणु बम से भी ज्यादा जहरीली है। इसके ऊपर पाखंड का नोबेल देखिए–जब देश खंडहर बन जाते हैं, तो मसीहा बनकर आने वाली संस्थाएं मरहम नहीं, बल्कि ब्याज की पर्ची लाती हैं। वही हाथ जिन्होंने युद्ध के ट्रिगर दबाए थे।

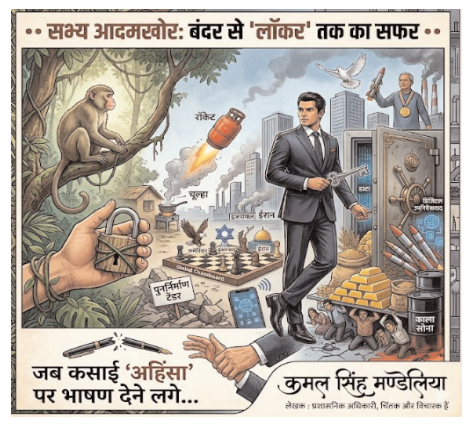

कमल सिंह मण्डेलिया
(लेखक:प्रशासनिक अधिकारी, चिंतक और विचारक हैं)

जन्मकल्याणक पर भगवान महावीर की निकलेगी अनुशासित विशाल रथ यात्रा

महावीर जयंती पर्व पर सभी मंडलों के साथ जैन सोशल ग्रुप भी रहेगा विशेष सहयोगी

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव के तहत शहर में प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी सकल जैन समाज द्वारा 30 मार्च सोमवार को भगवान महावीर की विशाल रथ शोभायात्रा निकलेगी, जिसकी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। समाज के सचिव सुनील जैन ने बताया कि जुलूस निर्धारित क्रम और अनुशासन के साथ निकलेगा, जिसमें विभिन्न जैन सामाजिक व धार्मिक समूहों की सहभागिता रहेगी। जुलूस में सबसे आगे ध्वज व घोड़े रहेंगे, जिनके पीछे त्रिशला व नवकार पाठशाला के बच्चे, विभिन्न बाल व युवा समूह, बैंड दल, जैन समाज के सदस्य और विभिन्न पंचकल्याणक महोत्सव के इंद्र परिवार शामिल होंगे। इसके बाद भगवान महावीर स्वामी का रथ चलेगा, जिसके पीछे ट्रस्टीगण, सामाजिक संगठन और महिला मंडल शामिल होंगे। समाज के प्रचार मंत्री सुनील जैन प्रेमांशु चौधरी जैन ने बताया कि जुलूस के दौरान तय स्थानों पर रुककर भजनो के माध्यम गरबा

प्रस्तुतियां होंगी। रथ खींचने की जिम्मेदारी मार्ग के अनुसार अलग-अलग मंडलों को सौंपी गई है। पूरे आयोजन में अनुशासन, स्वच्छता और यातायात व्यवस्था का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए गए हैं। सभी प्रतिभागियों के लिए ड्रेस कोड भी तय किया गया है, जिसमें पुरुषों के लिए सफेद व महिलाओं के लिए पीले या केसरिया वस्त्र निर्धारित है। सभी से बैनर के साथ शामिल होने और व्यवस्था बनाए रखने की अपील की है। सुनीलजैन ने ने बताया कि महावीर जयंती पर्व पर प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी रथयात्रा व सामूहिक वात्सल्य भोज समाज जनों के सहयोग से जैन सोशल ग्रुप के द्वारा संचालित होगा 30 मार्च भगवान महावीर जन्मकल्याणक के अवसर पर जैन सोशल ग्रुप खंडवा द्वारा सोमवार को विभिन्न धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।सोमवार को प्रातः 8÷00 बजे श्री जी की भव्य रथयात्रा श्री पार्श्वनाथ पोरवाड़ दिगंबर जैन मंदिर, सराफा बाजार से प्रारंभ होगी, जो विभिन्न मार्गो से होते हुए शहर में भ्रमण करेगी। रथयात्रा के दौरान घासपुरा स्थित नमिनाथ श्वेतांबर जैन मंदिर पर ठंडाई वितरण भी किया जाएगा। इसके अलावा सुबह 11 बजे से अग्रवाल धर्मशाला में सामूहिक वात्सल्य भोज का आयोजन रखा गया है। कार्यक्रम में जैन समाज के विभिन्न पदाधिकारी, सदस्य व श्रद्धालु शामिल होंगे। जैन सोशल ग्रुप के अध्यक्ष विकास लीना बडजात्या, सचिव संकल्प प्रज्ञा जैन, कोषाध्यक्ष अंकित प्रियंका जैन ने समाजजनों से भगवान महावीर की रथ यात्रा एवं अन्य कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने तथा सहयोग प्रदान करने अनुरोध कीया है।

महावीर जयंती के उपलक्ष में नगर में प्रतिदिन हो रहे हैं सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं भजन संध्या

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म जयंती महोत्सव 30 मार्च को धार्मिक उत्साह के साथ मनाया जाएगा। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की जन्म जयंती से महावीर जयंती तक प्रतिदिन खंडवा में जैन मंदिरो धर्मशाला एवं अलग-अलग स्थानो पर समाज एवं अलग-अलग मंडलों द्वारा भजन संध्या, भगवान का पालना झुलाना, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विनती का बुलावा जैसे कार्यक्रम प्रतिदिन आयोजित हो रहे हैं। समाज के सचिव सुनील जैन ने बताया कि हर्ष का विषय है कि धार्मिक और सांस्कृतीक नगरी खंडवा में बजरंग चौक स्थित महावीर दिगंबर जैन मंदिर का तीसरा कल्याणक महोत्सव 11 अप्रैल से 16 अप्रैल के बीच संपन्न होगा, जिसकी तैयारियां शुरू हो चुकी है। सुनील जैन ने बताया कि महावीर जयंती एवं पंचकल्याणक महोत्सव के उपलक्ष में संत निवास परिसर मैं माँ त्रिशला मंडल की ओर से भजन संध्या के साथ विनती का बुलावा संपन्न हुआ जिसमें बड़ी संख्या में सामाजिक बंधु एवं मातृ शक्ति ने उपस्थित होकर भजनों बाजे कुंडलपुर में बधाई, नगरी में वीर जन्मे। मेरे महावीर झूले पलना के माध्यम से भक्ति करते हुए भक्ति नृत्य

किया। इस आयोजन में माताएं अपने बच्चों को बालक वर्धमान बना कर लाई और शानदार प्रस्तुतियां दी।इस अवसर पर माँ त्रिशला मंडल की बहुओं द्वारा होने वाले पंचकल्याणक मैं बने इन्द्र इंद्राणी के स्वागत मैं भजनों पर नृत्य की प्रस्तुतिया दी। मां त्रिशला पाठशाला की बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। समाज के सचिव सुनील जैन ने बताया कि भजन संध्या के इस कार्यक्रम में पंचकल्याणक महोत्सव के लिए इंद्रो का चयन भी किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से स्वर्ण सौभाग्यवती कलश विराजमान करने का सौभाग्य मेधा आदित्य, अहिंसा प्रथम दिलीप पहाड़िया परिवार को प्राप्त हुआ। ईसान इंद्र मीना दिलीप पहाड़िया, सनद कुमार इंद्र जया अविनाश प्रकाश बडजात्या, महेंद्र इंद्र रीना ऋषभ कैलाश गंगवाल परिवार को प्राप्त हुआ। पंचकल्याणक के सभी इंद्रो का चयन हो चुका है। कार्यक्रम का संचालन रेनी लोहाडिया, नीतु जैन, अर्पिता रावका ने किया। आभार अध्यक्ष दिलीप पहाड़िया, सचिव सुनील जैन ने माना। समाज के प्रचार मंत्री सुनील जैन एवं प्रेमांशु चौधरी ने बताया कि महावीर जयंती के उपलक्ष मे पोरवाड़ परिवार खंडवा द्वारा भी रात 7.30 बजे से संगीतमय भक्ति कार्यक्रम शुभ मोती परिसर हॉस्पिटल के सामने में रखा गया था।

प्रथम बार आयोजित दो दिवसीय अंतर प्रांतीय सिंधी साहित्य सम्मेलन प्रारंभ

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग भोपाल के तत्वावधान में सिन्धी साहित्य अकादमी व्दारा प्रथम बार आयोजित दो दिवसीय अंतर प्रांतीय सिंधी साहित्य सम्मेलन एवं संत हिरदाराम साहित्य गौरव सम्मान समारोह शनिवार को प्रारंभ हुआ। खंडवा नगर के वरिष्ठ सिंधी, हिंदी साहित्यकार, लेखक निर्मल मंगवानी शामिल हुए। यह जानकारी देते हुए राष्ट्रीय सिंधी समाज प्रदेश प्रवक्ता निर्मल मंगवानी ने बताया कि उदघाटन सत्र सिन्धी साहित्य लोक से विश्व तक विषय में मुख्य अतिथि के रूप में संत हिरदाराम साहिब कुटिया प्रमुख परम् श्रद्धेय सिध्द भाऊ, विशेष अतिथि के रूप में भोपाल दक्षिण पश्चिम विधायक भगवानदास सबनानी, मोहन गेहानी, डॉ. रवि प्रकाश टेकचंदानी, सिन्धी साहित्य अकादमी निदेशक राजेश वाधवानी मंचासीन

रहे। डॉ. टेकचंदानी ने सिंधी भाषा एवं समाज के अनेक आयामों का विस्तृत उल्लेख कर सिंधी समाज को एक जूट होने की बात कही। श्री सबनानी ने अपने उदबोधन में कहा कि 14 अगस्त की विभीषिका को हमेशा कार्यक्रम आयोजित कर नयी पीढ़ी को बताना चाहिए। हमें पूर्व स्मृति को नहीं भूलना चाहिए। हमें अपने संस्कारों, संस्कृति, भाषा को आने वाली पीढ़ी को बताया होगा। परम् श्रद्धेय सिध्द भाऊजी ने उपस्थित साहित्य सर्जनकारों से मातृभाषा के विस्तार हेतु सटीक प्रयास करने की अपील की। इस मौके पर अकादमी व्दारा प्रकाशित वार्षिक पुस्तक सिन्धु मशाल का विमोचन हुआ। वही संत हिरदाराम साहित्य गौरव सम्मान से श्री नारी लच्छवाणी, नन्दकुमार सनमुखानी, डॉ. नादिया मसंद सहित तीनों साहित्यकारों को सिंधी साहित्य अकादमी व्दारा एक-एक लाख रूप की सम्मान राशि का चैक भेट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन कविता ईसरानी एवं आभार हर्षा मूलचंदानी ने माना। सम्मेलन का दित्वीय सत्र वरिष्ठ साहित्यकार खीमन यू. मूलाणी की अध्यक्षता एवं नारी लच्छवाणी, निदेशक राजेश वाधवानी की उपस्थिति में आयोजित हुआ। जिसमें मुख्य वक्ता डॉ. तुलसीदेवी ने सिन्धियत के विस्तार में सिन्धी सन्त साहित्य का योगदान विषय पर अपना सारगर्भित आलेख प्रस्तुत किया।

श्रीराम नवमी पर भव्य रामरथ यात्रा निकली

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

भगवान विष्णु के छटवे अवतार, प्रत्येक भारतीय के आराध्य देव भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव राम नवमी पर खण्डवा में संयोजक डॉ. मुनीश मिश्रा एवं भक्तों द्वारा बडाबम स्थित राम मंदिर से भव्य राम रथ यात्रा निकाली गई। रथ यात्रा बडावम राम मंदिर से आरंभ होकर कुम्हारवेडा, मालीकुंआ, बुधवारा, केवलराम चौक, बाम्बे बाजार, घंटाघर से बजरंग चौक स्थित राम मंदिर में रथ यात्रा का समापन हुआ। रथ यात्रा में पुरूष श्वेत वस्त्र एवं महिला केसरिया वस्त्र धारण किये हुए राम भजन के साथ चल रही थी। उल्लेखनीय है कि डॉ. मिश्रा द्वारा सन 1998 से निरंतर रथयात्रा निकाली जा रही है जिसमें सभी उत्साह से शामिल

होकर प्रभु की भक्ति के साथ सामाजिक समरसता की झलक दिखाई देती है। बग्गी पर श्रीराम के चित्र के साथ पं. पुष्पहासजी महाराज मुंबई विराजमान थे। ट्राली में मानस रामायण मंडली रामायण पाठ कर रही थी। भक्ति भाव से सरोवार रथ यात्रा का सभी धर्मो द्वारा स्वागत किया गया जिसमें बडाबम पर राजीव शर्मा परिवार, मालीकुंआ पर मुक्तिलाल नरेडी, बुधवारा में दीपू मिठाईवाले, वहीद चौधरी आदि ने रथयात्रा में श्रीराम की वंदना के साथ डॉ. मुनीश मिश्रा का पुष्पमाला से स्वागत कर सामाजिक समरसता का संदेश दिया। घंटाघर चौक पर कान्यकुब्ज ब्राह्मण सखी मंडल द्वारा रथ यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। रथ यात्रा का मुख्य आकर्षण राम जी की वेशभूषा में शिल्पा दुबे, सीताजी की भूमिका में रश्मि दुबे, लक्ष्मण रचना दुबे तथा बाल हनुमान के रूप में ईवियान त्रिवेदी थे । रथयात्रा का बजरंग चौक स्थित राम मंदिर में समापन हुआ जहां बजरंग चौक मंडल द्वारा धर्म सभा हुई। संयोजक डॉ. मुनीश मिश्रा ने कहा कि श्रीराम ने हमेशा सत्य के मार्ग पर चलने की हम शिक्षा दी है।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा । RNI No. MPHIN/2016/68059